आभार

गोस्वामी तुलसीदास और श्रीनारायणगुरु की कविता के दर्शन और भक्ति पक्षों का तुलनात्मक अध्ययन करने का उपदेश मुझे नारायणगुरुकुल फौन्टेशन के आचार्य पूज्यगुरु नित्यचैतन्ययती ने दिया था । इस अध्ययन के दौरान वे कृपापूर्वक नारायणगुरु और तुलसीदास के जीवन और रचनाओं के विषय में नये-नये तथ्य बताकर मेरा मार्गदर्शन करते रहे । कतिपय दिनों के पहले पुस्तक की हस्तलिपि पढ़वाकर सुनने की भी कृपा उन्होंने की । अगर इस महान गुरु का आशीर्वाद अलभ्य होता तो इस शोध-प्रबन्ध को मैं पूरा नहीं कर पाती, इसमें मुझे कोई शक नहीं है । मैं सप्रणाम उनके अनुग्रह केलिये कृतज्ञता ज्ञापन करती हूँ ।

पंडितवर एवं हिन्दी एवं मलयालम के श्रेष्ठ ग्रन्थकार डा. वेल्लायणी-अर्जुनन , अनुसंधान कार्य में मेरे मार्गदर्शक रहे हैं । विषय के संयोजन और लेखन में उन्होंने मेरा पथ-प्रदर्शन किया, व्यस्तता के बीच भी समय-समय पर अमूल्य निर्देश देते रहे । उनके इस सौजन्य केलिये मैं दिल से उनका आभार मानती हूँ ।

वर्कला नारायणगुरुकुल मेरेलिये सदा प्रेरणा का अक्षय स्रोत रहा है। नारायणगुरुकुल के वर्तमान आचार्य स्वामी मुनिनारायण प्रसाद ने अनेक अवसरों पर शोधकार्य में मुझे आवश्यक सुझाव देने की कृपा की है । इस केलिये मैं उनके प्रति सादर कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ । गुरुकुल के ब्रह्मविद्या मन्दिर ग्रन्थालय(East-West University Library) और नीलगिरी के पेमहिल नारायणगुरुकुल के नटराज गुरु रिसर्च लाइब्रेरी के अमूल्य ग्रन्थों से मैं ने यथेष्ट फायदा उठाया है ।

मेरे पूज्य पिता, दिवंगत श्री. नीलकंठन वैद्यर , जिन्हें श्रीनारायण गुरु को निकट से देखने एवं अनुग्रह प्राप्त करने का सौभाग्य मिला था, के विवरणों से छोटी आयु में ही उस युगपुरुष के प्रति मेरे दिल में श्रद्धा का भाव उत्पन्न हुआ था । मेरी माँ श्रीमती जानकी शोध कार्य में निरंतर मेरा उत्साह बढाती रही । अपने माता-पिता से मिले इस बढावे का मैं सादर स्मरण करती हूँ ।

श्रीमती अंबिका ने §केरल हिन्दी प्रचार सभा§ सुचारु ढंग से मेरे शोध प्रबन्ध का टंकण कर दिया । तिरुवनन्तपुरम सेंट जोसफ्स प्रेस के अधिकारियों की सेवा भी उल्लेखनीय है । उनके प्रति भी मैं शुक्रिया अदा करती हूँ ।

मेरी बहन श्रीमती सुलेखा रामचन्द्रन ने प्रबन्ध की हस्तलिपि एवं सहायक ग्रन्थसूची तैयार करने में जो सहायता दी है, इसकेलिये उससे मैं कृतज्ञ हूँ ।

मेरे पति श्री. विश्वंभरन और बेटियाँ दीप्ती और दीपा से मिली मदद और प्रोत्साहन का भी मैं सप्रेम स्मरण करती हूँ ।

केरल विश्वविद्यालय का पुस्तकालय मेरा शोध केन्द्र रहा है । उसके अध्यक्ष और दूसरे कर्मचारियों से प्राप्त सहयोग केलिये मैं उन के प्रति आभारी हूँ ।

विनम्रतापूर्वक ,

जे. महिलामणी